डॉ. सिद्धय्या पुराणिक (काव्यानंद) की जीवनी

कोप्पल जिला जो पहले रायचूर जिले का एक भाग था, वह कर्नाटक में है। उसका धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक इतिहास समृद्ध है। वह कई श्रेष्ठ साहित्यकारों का आवास स्थान रहा है। वह प्रसिद्ध मंदिरों के कारण भी लोकप्रिय है। उसका इतिहास सम्राट अशोक से कदंब, गंगा, चालुक्य आदि सम्राटों तक फैला हुआ है। इस जिले में विविध धर्म के लोग स्नेह-सौहार्द से रहते हैं। इस जिले को जैन समुदाय का काशी कहा जाता है।

हम सिद्धय्या पुराणिक जी की बाल्य घटना से शुरु करेंगे। घटना स्कूल में हुई जहाँ उनके मामा अध्यापक थे। बच्चों के रुझान को जानने के लिए अध्यापक ने बच्चों से वे क्या चाहते हैं उसे लिखने को कहा। हरेक ने स्लेट में क्या लिखा है देखा तो अध्यापक ने पाया कि एक ने लिखा है मिठाई चाहिए, दूसरे ने लिखा है पेन्सिल चाहिए। वे यह देखते चकित हुए कि एक ने स्लेट में लिखा था कि 'मुझेज्ञान चाहिए'। वही छात्र सिद्धय्या जो आगे प्रसिद्ध लेखक तथा समर्थ अइ.ए.एस. अधिकारी बने। उनकी ज्ञान की पीपासा ने ही उनका कन्नड. अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत और उर्दू में विद्वान बनाया। उनके लेखन में इन उक्त भाषाओं की महक को महसूस कर सकते हैं।

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक का जन्म 18 जून 1918 को द्यामपुर में हुआ, जो कोप्पल जिले के यल्बुर्गी तालूक में है। उनके पिता का नाम था कल्लिनाथ शास्त्री और माँ का नाम था दानम्मा। कल्लिनाथ शास्त्री जी धनी नहीं थे। पंरतु उनका अत्यंत सुसंस्कृत व्यक्तित्व था। पुराण प्रवचन करते थे। उन्होंने अपने वशीभूत करनेवाले पुराण कीर्तनों से और अपने से ही रचित नाटकों के अभिनय द्वारा गाँव के लोगों का दिल जीत लिया था। उनके साथ पुराणिक जी ने सुखी और शांतिपूर्ण जीवन बिताया। माता दानम्मा दासोह करने में प्रसिद्ध थीं। उनके घर में हमेशा अतिथियों का लगातार आना-जाना रहता था। उनके परिवार में पुराणिक जी ही सब से बड़े बेटे थे। उनके दो छोटे भाई थे अन्नदानय्या और बसवराज और बीरवती और शरणम्मा नाम की दो बहनें थीं। उनके दादा चेन्न कवि 'कवि रत्न' कहलाते थे। सिद्धय्या पुराणिक का सौभाग्य है कि ऐसे संपन्न घराने में जन्म पाये। केंगल वीरभद्र उनके रिश्तेदार और अध्यापक भी थे। पुराणिक जी बचपन में ही शिशुनाळ शरीफ़, मुप्पिन षडाक्षरी, बाललीला महांत - आदि की रचनाओं से परिचित थे।

गाँव के छोटे स्कूल में, जिसे गाँव के लोग ही चलाते थे, आर्थिक तंगी के कारण वहाँ स्थायी अध्यापकों की व्यवस्था नहीं थी। अतः स्कूल में पढ़ाई की व्यवस्था ठीक न रहने से कल्लिनाथ शास्त्री जी ही पुराणिक जी को घर में पढ़ाते थे । पुराणिक जी को भाषा, व्याकरण और गणित ही नहीं, जैमिनी भारत, प्रभुलिंगलीले, शबर शंकर विळास आदि भी घर में पढ़ाते थे। पुराणिक जी का ज्ञानवर्धन उनके दादा कविरत्न चन्नकवि के प्रवचन और चर्चा सुनने के द्वारा भी होता था। उनके प्रवचनों ने पुराणिक जी के दो विशिष्ट गुण - एकाग्रता और तीव्र यादगार को बढ़ाने में

प्रेमपूर्ण उत्तेजना दी।

स्कूली शिक्षा :

सरकार द्वारा प्रैमरी स्कूल बाद में द्यामपुर में प्रारंभ होने पर भी, उस गाँव में किसी की हत्या होने के कारण स्कूल बंद होना पड़ा। कल्लिनाथ शास्त्री जी जो अपने बेटों को स्कूल भेजने कातुर थे, उन्हें पडोस के गाँव चिक्केनकोप्प भेजा, जहाँ उनके मामा अध्यापक थे और वह स्कूल वहाँ के स्थानीय मठ से चलता था। कुछ ही समय में यह स्कूल भी बंद हुआ। क्योंकि यहाँ भी गाँव में हत्या हुई थी। अंतः कल्लिनाथ शास्त्री जी ने अपने बेटे को समीप के 'विद्यानंद गुरुकुल में भर्ती कराया। इस स्कूल में प्रवेश पाना उतना आसान नहीं था । अतः प्रिंसपाल ने पुराणिक जी की कई तरह की परीक्षाएँ कीं। पुराणिक जी की बुद्धिमत्ता से प्रिंसपाल विस्मित हुए और उन्होंने पुराणिक जी को दूसरी कक्षा में प्रवेश दिया।

प्रिंसपाल की अचानक मृत्यु हो गयी और उनके बदले में जो आये थे वे हमेशा लाइब्ररी में पुस्तकें पढ़ने में लगे रहते थे। वाइस प्रिंसपाल छात्रों को स्कूल चलाने के लिए धन राशी इकट्ठा करने गाँव भेजते थे। साथ ही, स्कूल मुख्यतः ब्राह्मणों से चलाया जाता था अतः वहाँ जाति-भेद दिखायी पड़ता था। वाइस-प्रिंसपाल अब्राह्मण छात्रों को अनेक घरेलु काम करने देते थे। इस अपमान को न सहकर पुराणिक जी ने स्कूल जाना ही छोड़ दिया था। स्कूल जाने के बहाने उन्होंने अपना सारा समय खेल-कूद और तैरने में बिताया। कुछ महीने बाद कल्लिनाथ शास्त्री जी को इसका पता चला। पुराणिक जी को लेकर शास्त्री जी स्कूल गये और वाइस-प्रिंसपाल को बताया कि किन परिस्थितियों के कारण स्कूल आना छोड़ दिया है। वाइस-प्रिंसपाल ने पुराणिक जी को वापस ले लिया और पुराणिक जी को बताया कि उस पर अधिक भरोसा है तथा अपनी सारी शक्ति ज्ञानवृद्धि में लगाने के लिए कहा। पुस्तकालय से उन्होंने पढ़ने के लिए 'शिव भक्त भद्रमु' पुस्तक दी। अगले दिन पुराणिक जी को उसका सारंश बताना था। पुराणिक जी के उस सारंश से वाइस-प्रिंसपाल बहुत प्रभावित हुए। तब से पुराणिक जी को हर दिन एक पुस्तक देने लगे और अगले दिन पुराणिक जी उसका सारांश लिख कर देते। इससे पुराणिक के जीवन में परिवर्तन हुआ। इस प्रतिकूलता ने उनके भाग्य को जगा दिया। तब उनके ज्ञान में वृद्धि होने लगी।

कल्बुर्गी में शिक्षा

कल्लिनाथ शास्त्री जी ने दूरदृष्टि से अपने बेटे को उस्मानिया विश्वविद्यालय से संबद्ध-हाई स्कूल में भर्ती कराया ताकि आगे विश्वविद्यालय की पढ़ाई में सुविधा हो। वे बेटे पुराणिक को लेकर कल्बुर्गी गये और हाई स्कूल के प्रिंसपाल मौल्वी जुल्फीकर अली हक्कानी जी से मिले। अंग्रेजी और गणित में पुराणिक जी का साक्षात्कार लेने के बाद, उन्होंने पुराणिक जी से संतृप्त होकर हाई स्कूल में दाखिल कर लिया। पुराणिक जी को रहने के लिए मठ के हॉस्टल में व्यवस्था कर शास्त्री जी द्यामपुर लौटे।

सिद्धय्या पुराणिक जी ने गणित को ऐच्छिक विषय के रूप ने चुना। रहमत उल्ला खाँ उनके गणित के अध्यापक थे जो बहुत अच्छे और अनुशासन के पक्के थे। वे चाहते थे कि सभी छात्र गणित को घर में प्रतिदिन करें और अगले दिन दिखाये। पुराणिक जी इस कार्य को नियमित रूप से करते थे, इस प्रकार अध्यापक को उन्होंने प्रभावित किया। मगर एक दिन वे घर में करने के लिए जो दिया था, कर न पाये थे। अगले दिन गणित अध्यापक को पता चला कि पुराणिक जी ने गणित का काम नहीं किया है। अध्यापक ने गुस्से में कहा कि तुम मेरे क्लास में पढ़ने योग्य नहीं हो। कोई दूसरा विषय ले सकते हो। इस पर क्लास के अन्य छात्र सब हँस पड़े। इससे पीड़ित होकर यह कहकर क्लास से बाहर निकल पड़े कि वह भी उनका छात्र बनना नहीं चाहता। अगले दिन कन्नड अध्यापक भीमसेनराव जी के पास गये और वहाँ दखिल हुए। यह घटना पुराणिक जी को कन्नड भाषा-साहित्य की ओर मुड़ने में सहायक हुई। पुराणिक जी कन्नड अध्ययन में तल्लीन होकर स्कूल के विशाल पुस्कालय में अध्ययनरत हुए। इसी अवधि में उन्होंने अपनी पहली कविता रची और प्रथम पुरस्कार भी पाये।

पुराणिक जी को फ्री-हास्टल छोड़ना पड़ा। क्योंकि उन्होंने वहाँ के भ्रष्टाचार को खोल दिया था। वे गुरु बसव मठ में प्रवेश पा गये जहाँ केवल रहने के लिए व्यवस्था थी। भोजन के लिए अन्यत्र व्यवस्था करनी थी। भोजन के लिए लोगों के आमंत्रण के लिए इंतज़ार करना पड़ता था। इसलिए यह व्यवस्था नियमित नहीं थी। इस बीच उनके पिता को धार्मिक पौरोहित्य कार्य कम मिलते थे। इसलिए उन्हें आयुर्वेद सीखकर बैद्य बनना पड़ा। उससे आमदनी कम होने से पुराणिक जी को पिता से सहायता न मिल सकी। पुराणिक जी स्कूल के कन्नड संघ के सचिव थे और उन्होंने कई साहित्यिक समारोहों का संचालन किया था। जस्टीस तुकोळ, द.रा.बेन्द्रे, रं.श्री. मुगली और गोकाक जैसे साहित्यकारों के संपर्क से और उनके भाषण सुनने से बहुत प्रभावित हुए थे।

साथ ही पढ़ाई में अथक परिश्रम से वे मेट्रिक्युलेशन परीक्षा में उस्मानिया यूनिवर्सिटी में ही तीसरा रेंक और कन्नड और अंग्रेजी में प्रथम रेंक पा गये। स्कूली शिक्षा में यह उनकी प्रथम अत्युन्नत उपलब्धि थी। प्रिंसपाल हक्कानी, परिवार के सदस्य तथा अध्यापक वर्ग सभी इस उपलाब्धि से खुश हुए।

इंटर मीडियट परीक्षा

पुराणिक जी के मेट्रिक परीक्षा के परिणाम से प्रभावित होकर प्रिंसपाल हक्कानी जी ने उन्हें स्कूल हास्टल में निःशुल्क प्रवेश कराया, साथ ही नगद भत्ता भी दिलाया। और उन्होंने अंग्रेजी के लिए विशेष पढ़ाई की व्यवस्था की। इतना ही नहीं स्कूल व्यायामशाला में निःशुल्क भर्ती कराया। हक्कानी जी ने समझाया कि मन लगाकर पढ़ो और सेहत् की और भी ध्यान दो। उन्होंने यह भी सलाह दी कि इंटरमीडियट परीक्षा में सर्वप्रथम आने के लिए लक्ष्य बनाओ। पुराणिक जी ने पूरी निष्ठा से पढ़ाई की। परंतु पुराणिक जी जब परीक्षा नज़दीक आयी सख्त बीमार पड़े और परीक्षा देने हैदराबाद जा न पाये।

इसी समय में माँ-बाप ने शादी का प्रस्ताव भेजा। पुराणिक जी के मामा अपनी बेटी से शादी कराना चाहते थे। पुराणिक जी ने शादी के प्रस्ताव को इसलिए नहीं माना कि पहले पढ़ाई पूरा हो जाय। परिवार में शादी के लिए आग्रह करने पर उससे बचने वे गुप्त रूप से घर से भाग कर आलमट्टी चले गये, जहाँ हर्डेकर मंजप्पा जी का आश्रम है। इससे पुराणिक जी एक साल अध्ययन से वंचित हो गये। परंतु मंजप्पा जी के मार्गदर्शन से बहुत कुछ पाया। जीवन भर में हर्डेकर मंजप्पाजी का प्रभाव पुराणिक जी पर रहा। वहाँ रहते वे उस विशाल ग्रंथालय में अध्ययन में डूबे रहते। तभी से वे 'काव्यानंद' काव्यनाम से लिखते और उनकी कविताएँ, लेख प्रकाशित हुए। आगे जब पिता से मिले और परिस्थिति से अवगत कराया तो पिता भी मान गये और आशीर्वाद दिया। पुराणिक जी ने हैदराबाद में निजी तौर पर इंडर मीडियट परीक्षा लिखी। वे उस्मानिया विश्वविद्यालय में तीसरे रेंक आये और कन्नड और संस्कृत में सर्वप्रथम आये। प्रिंसपाल हक्कानी और उनके परिवार के सदस्य तथा गाँव के सभी अत्यंत खुश हुए।

हैदराबाद में कालेज शिक्षा :

प्रिंसपाल हक्कानी जी ने एक सिफारिश पत्र दिया और पुराणिक जी से कहा कि इस पत्र को लेकर हैदराबाद में उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हुसैन अली जी से मिलो। पत्र देखते ही साथ में इंटरमीडियेट परीक्षा परिणाम को देखते ही कालेज में दाखिल कर लिया और कालेज शु:ल्क को माफ भी कर दिया। पाठ्यक्रम के अनुसार श्रद्धा से अध्ययन करने के साथ ही कई कन्नड के कार्यक्रमों में अपने को सक्रिय कर लिया। इस दौरान बड़े बड़े कन्नड साहित्य के दिग्गजों से मिलने और उनके भाषण सुनने का अवसर प्राप्त किया। प्रो. डी. के. भीमसेनराव जी और साहित्यकार मान्वी नरसिंहराव जी के लिए आत्मीय हो गये। अंतिम बी.ए. परीक्षा में पुराणिक जी उस्मानिया विश्वविद्यालय में प्रथम रेंक आ गये और सबकी प्रशंसा के पात्र हो गये।

तहसीलदार

इसी दौरान तहसीलदार पद के लिए आवेदन पत्र भेजने आमंत्रण आया। प्रो. हुसैन अली खाँ ने आवेदन भेजने प्रोत्साहित किया और एक शिफारिश पत्र भी दिया। साक्षात्कार समिति के अध्यक्ष खागी साहेब थे। पुराणिक जी को साक्षात्मक लेते कई विषयों पर उनका प्रभुत्व देखने के बाद और उन्होंने बी.ए. परीक्षा के अंक देखने के बाद कुल निष्पादन से प्रभावित हुए और तहसीलदार पद के लिए चयन कर लिया। पुराणिक जी 30 दिनों के प्रशिक्षण और 60 दिनों के अन्य परिवीक्षा तहसीलदारों के साथ अभिविन्यास प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया।

इस दौरान एक दुखद घटना घटी। पुराणिक जी की बहन वीरावती जी का, जिनसे उनका अधिक लगाव था, देहांत हो गया।

पुराणिक जी का विवाह

पुराणिक जी ने गिरिजादेवी जी से विवाह कर लिया जिसे उनके माँ-बाप ने चुना था। यह विवाह 11 मई 1944 को धारवाड़ में संपन्न हुआ।

सरकारी सेवा में पुराणिक जी का योगदान

सिद्धय्या पुराणिक जी अत्यंत निष्ठवान, समर्पित, समर्थ और परिश्रमी अफ़सर थे. उन्होंने उस प्रदेश के कल्याण और विकास के लिए काम किया। जब भी वे नये विभाग के लिए स्थानंतरित होते, तो वे पहले वहाँ के अधिकारी वर्ग से मिलते और उनकी समस्याओं को जान लेते। वे उस विभाग से संबंधित नीति -नियमों का विस्तार से अध्ययन करते इससे निर्णय लेने में समर्थ होते और कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने में इससे सुविधा मिलती। वे अपने कार्यालय से संबंधित अधिकारियों को भी साथ लेते। वे सब के लिए सहज ही पहुँच के थे। वे हमेशा अपने कार्य को पूर्ण करने में सरल मार्गों को ढूँढते। वे अपने वरिष्ठ अधिकारियों से अच्छा संबंध रखते और अपने कार्य पूरा करने में उनसे मदद लेते। उनकी विश्वसनीयता और शुद्ध व्यक्तित्व ने लोगों को आकर्षित किया। वे कभी भी जातिभेद नहीं करते थे। वे निम्न-दलित वर्ग के प्रति अनुकंपा रखते और जितना संभव है वे उनकी मदद के लिए कोशिश करते। पुराणिक जी ने समय को महत्व दिया और समय का न्यायोचित ढ़ंग से सदुपयोग किया।

हैदराबाद क्षेत्र में पुराणिक की सेवा :

प्रशिक्षण के बाद पुराणिक जी पहले नांदेड में नियुक्त हुए। यहाँ प्लेग और अकाल के कारण किसानों से उगाही वसूल करना मुश्किल था। उगाही वसूल करते समय एक तहसीलदार की हत्या हो गयी थी। जब किसी भी तहसीलदार ने वहाँ उगाही वसूल करने जाने से इन्कार कर दिया तब पुराणिक जी पुलिस सहायता के बिना वहाँ जाने तैयार हो गये। गाँव में किसानों के सुख-सुविधा के बारे में पूछ-ताछ करते उनके ह्रदय को जीत लिया और उन्हें रेशन कार्ड उपलब्ध कराया और उन्हें रेशन कार्ड के अनुसार रेशन प्राप्ति का विश्वास दिलाया। इससे प्रभावित होकर गाँववाले उगही धान्य देते मान गये। 1945 में पुराणिक जी गुल्बर्गा के लिए स्थानांतरित हुए। वहाँ वे भूमि रेकार्ड के सहायक कलेक्टर पद पर नियुक्त थे। उसके बाद 1948 को जागीरात् के सहायक कमीशनर बने। इस दौरान्, मुसलिम रजाकर आंदोलन के कारण राजनैतिक अशांति थी। वहाँ हिन्दु लोग भयाक्रांत थे और उन पर टूट पड़ते थे।

1951 में, सहायक रेविन्यू सचिव के रूप में उनका हैदराबाद के लिए तबादला हुआ। 1952 में आप मंत्री अन्ना राव जी के निजी सचिव नियुक्त हुए। पुराणिक जी ने सभी तालूकों का भ्रमण किया और कल्याण कार्य की आवश्यकता को देख लिया और वही पर अनुमोदन दे दिया। इससे पीने का पानी, सड़क निर्माण, सफाई आदि कार्य शुरु कर सके। 1953 में पुराणिक जी कृषि मंत्री चेन्ना रेड्डी जी के निजी सचिव नियुक्त हुए। इनके कार्यकाल में ही अनेक छोटी सिंचाई योजनाएँ सभी जिलाओं में शुरु हुईं और पूर्ण भी हुईं।

1955 में पुराणिक जी का उप कलेक्टर के रूप में तंडूर को तबादला हुआ। उन्होंने स्कूल

खोलना, स्कूल के लिए स्थायी भवन निर्माण, सड़क, छोटी सिंचाई योजनाएँ आदि विकास योजनाओं को शुरु किया।

कर्नाटक राज्य में पुराणिक जी की सरकारी सेवा

1956 नवंबर पहली तारीख को भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्घटन के फलस्वरूप विशाल कर्नाटक राज्य का उदय हुआ। पुराणिक जी ने कर्नाटक सेवा का विकल्प, इससे उनकी तीन साल की वरिष्ठता और मुख्य सचिव होने के अवसर खो कर भी कर्नाटक राज्य जो मातृ राज्य हैं होने से, मान लिया।

1957 में वे यादगीर के उपकलेक्टर नियुक्त हुए। पिछड़ा हुआ क्षेत्र होने से उन्होंने अनेक योजनाएँ प्रारंभ कीं। भू मालिकों को विश्वास में लेकर और शिक्षा की आवश्यकता के बारे में समझाकर, उन्होंने अनेक स्कूलों की स्थापना भूमालिकों से भूमि लेने के द्वारा की। उन्होंने स्थायी स्कूल भवनों का निर्माण किया और गाँवों में पुस्तकालय प्रारंभ किया। महिला मंडलों की रचना की और उसके द्वारा महिलाओं के लिए रोजगार की व्यवस्था की। डॉ. एम. सी. मोदी की मदद से आँख-चिकित्सा शिबिर कराया। हरिजन कालोनियों का निर्माण किया जहाँ पीने का पानी, विद्युत्, स्कूल और मेडिकल क्लिनिक हो। उन्होंने रोजगार की भी व्यवस्था की।

1958 में पुराणिक जी ने आय. ए. एस. केडर में पदोन्नति पायी। 1960 में पुराणिक का शिक्षा विभाग के उपसचिव के रूप में तबादला हुआ और वे बेंगलूर आये। राज्य की सभी जगह सरकारी प्राइमरी, मिडल, हाईस्कूल, कालेज और पालिटेक्निक्, के खुलने के लिए कारण बने। कन्नड़ साहित्य परिषद् द्वारा प्रथम समग्र कन्नड शब्दकोश और मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा 'विश्व कोश योजना' बनाने में अग्रणी बने। इसमें वे विश्वकोश समिति के सदस्य थे और पूर्ण होने तक, कई वर्षा तक सदस्य बनकर, कन्नड साहित्य में अपनी विद्वत्ता से कार्य को तीव्रता दी। उन्होंने रवींद कलाक्षेत्र के सभांगण के निर्माण के लिए अथक परिश्रम से धन संग्रह किया। उन्होंने प्रसिद्ध कन्नड साहित्यकारों की पुस्तकों की छपाई के लिए निधि प्राप्त करायी ताकि पुस्तकें पाठकों को सहायिकी दर में प्राप्त हो।

1962 में पुराणिक जी सूचना और पर्यटन विभाग के निदेशक बने। मैसूर दशहरा प्रदर्शनी में सूचना विभाग के नव परिवर्तनकारी स्टाल ने स्वर्णपदक जीत लिया। उस समय सरकार का विज्ञापन बजट बहुत कम था और वह बड़े प्रकाशकों के प्रभाव में था। उन्होंने सभी प्रकाशकों को धन वितरित हो ऐसी व्यवस्था थी। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई सरकारी भवनों का निर्माण किया गया।

1964 में पुराणिक जी वित्त और स्वर्ण-नियंत्रण के उप सचिव बने। उन्होंने स्वर्णाभूषणव्यापारी और कुशल कर्मियों के लिए पर्याय रोजगार की व्यवस्था की और उन्हें आर्थिक सहायता दी। क्योंकि वे चीना-युद्ध के कारण बुरी तरह से प्रभावित थे। वित्त विभाग सभी सरकारी विभागों के नोडल एजेंसि होने से उन्होंने सभी विभागों के साथ उकसाते हुए परस्पर कार्य किया। इससे सभी

फाइलों की विकास कार्य के लिए शीघ्र विलेवारी हुई।

1965 में पुराणिक जी का डेप्यूटी कमीशनर् के रूप में कूर्ग के लिए तबदला हुआ। कर्नाटक के मुख्य मंत्री श्री एस. निजलिंगप्पाजी ने उन्हें बुलाया और कहा कि कर्नाटक राज्य में मिल जाने से पहले वह एक छोटा स्वतंत्र राज्य था और उसकी अपनी सरकार थी। वहाँ विकास कार्य के न होने से जनता संतृप्त नहीं थी। इसलिए उन्होंने पुराणिक जी से कहा कि आप समग्र विकास कार्य करके लोगों की उक्त धारणा को बदलिए। पुराणिक जी ने सभी क्षेत्रों में योजनाओं के द्वारा कूर्ग में विकास कार्य शुरु किया। उन्होंने कावेरी मूल तलकावेरी में विद्युत् की व्यवस्था की। सरकारी अतिथि गृह का निर्माण किया। इससे आगे निजी अतिथि-गृह निर्माण में सुविधा मिली। इससे यात्रियों का प्रवेश बढ़ गया। कूर्ग का मुख्य नगर मडिकेरी में अधिक बरसात होता है। परंतु वहाँ जल पूर्ति व्यवस्था ठीक न रहने से गर्मियों में पानी की कमी की समस्या थी। पुराणिक जी के कारण वहाँ मडिकेरी में समग्र जल पूर्ति व्यवस्था शुरु हुई। कूर्ग जिला में खूब पानी बरसने पर भी वर्ष में एक ही फसल निकालते थे। पुराणिक जी ने दूसरी फसल का प्रारंभ कराया उसमें सफल हुए और उन्हें लोगों से, वरिष्ठ अफसरों और पत्रिका माध्यम से प्रशंसा मिली। सड़क निर्माण और सुदूर गाँवों के लिए रास्ते में दीप आदि में सुधार हुई। 1971 में भारत-पाकीस्तन युद्ध के समय में पुराणिक जी राष्ट्रीय छोटी बचत निधि और राष्ट्रीय रक्षा निधि के लिए निधि का संग्रह किया। और सारे कर्नाटक में कूर्ग जिला निधि-संग्रह कार्य में सर्वप्रथम स्थान पर रहा। उन्होंने युवाओं को सेना में भर्ती होने के लिए उत्तेजित किया। फलस्वरूप भारत में ही अत्यधिक संख्या में सेना में कूर्ग से भर्ती हुए। जब पुराणिक जी कूर्ग में डेप्यूटी कमीशनर नियुक्त हुए तब 18,000 फाइल आफीस में निर्णय के लिए रूके हुए थे। तालूक स्तर पर अधिकतर स्पष्टीकरण के लिए पड़े थे। तो पुराणिक जी संबंधित अधिकारियों के साथ हर तालूक में गये और आवश्यक विवरण पाकर फाइलों को पूरा कर दिया। मडिकेरी में संपन्न जल पूर्ति के उद्‌घाटन के अध्यक्ष मुख्यमंत्री निजलिंगप्पाजी ने पुराणिक जी का अभिनंदन कर कहा कि सभी लोग संतृप्त हो ऐसा प्रशंसनीय विकास कार्य आपने किया है। जब पुराणिक जी का बेंगलूर के लिए तबादला हुआ तब अनेक बिदायी समारोह मनाये गये और लोगों ने उनके विकास कार्यों की भूरीभूरी प्रशंसा की। इन दो सालों में जो कार्य कूर्ग में हुआ वह जब कूर्ग स्वतंत्र राज्य बना था तब न हुआ था। इंडियन एक्सप्रेल समाचार पत्रिका ने पुराणिकजी की कार्य दक्षता पर आलेख लिखा था।

1967 में पुराणिक जी परिवहन आयुक्त के रूप में बेंगलूर आये। यहाँ बस पर्मिट देना, जो भ्रष्टाचार का मूल था, व्याज्य का कारण था। पुराणिक जी ने पूरा अध्ययन कर सभी अर्ह आपरेटरों के लिए पर्मिट दिया और अंतर राज्य बसों और अंतरा-राज्य बसों को बढ़ाया। यात्रा बसों के लिए भी पर्मिट बढ़ाया। उन्होंने अचानक भेंट करने के और कड़ी निगरानी के द्वारा भ्रष्टाचार पर रोक लगाया। पुराणिक जी ने जिला स्तर पर, उच्च स्तर के अफसर पदों के निर्माण द्वारा शक्ति का विकेंद्रीकरण किया। और आवश्यक स्टाफ की भी व्यवस्था की। उनके तीन साल के कार्यकाल में राजस्व विभाग ने 7 करोड़ से 11 करोड़ आमदनी बढ़ायी। सरकार ने इसकी खूब

प्रशंसा की।

1970 में पुराणिक जी बेलगाँव में उप आयुक्त नियुक्त हुए । कन्नड भाषी और मराठी भाषी लोगों के बीच अनबन का प्रदेश है। कुछ तालूक जहाँ अधिक मराठी भाषी रहते हैं वहाँ विकास कार्य नहीं हुआ था। इस कारण से भी अनबन था। पुराणिक जी ने जिले के सभी तालूकों में कई विकास कार्यों को प्रारंभ किया। और एक दशकों पुरानी समस्या थी। वह है बल्लारी नाला के स्थान में सैकड़ों एकड़ उपजाऊ भूमि मानसून वर्षा के समय पानी से भर गया था और इससे अधिक मात्रा में फसल का नाश होता था। इस समस्या को हल करने पुराणिक जी इंजिनियरों के साथ व्यक्तिगत रूप से गये और पाया कि वहाँ कुछ कृषकों ने ज़मीन अपना लिया था। उन्होंने उन कृषकों से कहा कि ज़मीन को सरकार के लिए दीजिए बदले में भूमि ले लीजिए। उसके बाद हिडकल बांध से बुल्डोज़र लाकर योग्य पानी के लिए नाला बनवाया ताकि पानी का बहाव सुगम हो। आगे मानसून में उससे फसल में पानी आना बंद हुआ और फसल भी अच्छी निकली। इसे देखने लोग और माध्यम के लोग भी राज्य के कोने कोने से आये। जो योजना पूर्ण होने में करोड़ों रुपये लगती थीं वह एक लाख रुपये में हो गयी। सरकार और बेलगाँव जिले के लोगों ने इस कार्य की खूब प्रशंसा की। पुराणिक जी ने एम.के. हुब्बली शूगर फेक्टरी का पुनः प्रारंभ कराया और उसके पुनरुज्जीवन से ईख पैदा करनेवाले बहुत खुश हुए। उन्होंने चीफ इंजिनियर एस.जी. बाळेकुंद्रि जी के साथ मलप्रभा बांध योजना निश्चिय समय में पूरा की और कर्नाटक के हजारों एकड़ भूमि के लिए सिंचाई जल की व्यवस्था हो गयी। पुराणिक जी ने बांध के कारण जो गाँव पानी में डूब गये थे, वहाँ के लोगों के लिए विद्युत् जल आपूर्ति, स्कूल, क्लिनिक सहित पुनर्वसति की व्यवस्था की और उन लोगों के लिए रोजगार की भी व्यवस्था की। उनके दो साल की अवधि में बेलगाँव में पुराणिक जी ने अनेक चुनौतियों का सामना किया और बहुत सारी योजनाओं को पूरा किया, उन्होंने 1971 में सेंन्सस का, 2 चुनावों का, राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री की भेंट, अकाल, बांगला युद्ध। युद्ध में घायलों के लिए पुर्नवसति और डायरी पूर्ण करने के साथ कई विकास योजना पूर्ण करना, 21 रोड योजनाएँ, 66 ग्रमीण जल आपूर्ति, 344 स्कूल भवन निर्माण, 16 सरोवरों का पुर्ननिर्माण आदि पूर्ण किया।

1972 में पुराणिक जी की बेंगलूर के लिए तबादला हुआ श्रम और समाज-कल्याण आयुक्त के रूप में। तब एच.एम.टी. बेंगाल लैंप, रेम्को आदि में अशांति थी। अत्यंत कम-समय में पुराणिक जी ने समस्याओं को हल कर दिया और इस पर 'हिन्दु' पत्रिका में आलेख भी निकला था। पुराणिक जी ने औद्योगिक शांति के लिए प्रयत्न किया। वे श्रमिकों और प्रबंधक वर्ग के बीच संपर्क रखते थे और इससे समस्याएँ प्रारंभ में ही सुलझ जाती थीं। कल्याण आयुक्त के रूप में उन्होंने खाँ में काम करनेवालों के लिए 1500 गृह की, जहाँ बिजली, पेय जल की व्यवस्था हो और स्कूल, कालेज अस्पताल भी, व्यवस्था की। केन्द्र सरकार ने पुराणिक जी के इस कार्य की प्रशंसा की। 1976 में सेवा निवृत्त होने से पहले तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश में इस प्रकार का कार्य किया।

हैदराबाद क्षेत्र में कन्नड भाषा को बढ़ावा देने के कार्य में पुराणिक जी की देन

निज़ाम रियासत के अंतर्गत आज के कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों के बहुत भाग थे। आज के कर्नाटक के बीदर, रायचूर और गुल्बर्गा जिला जहाँ कन्नड भाषी अधिक संख्या में हैं। इन क्षेत्रों में लोग कन्नड भाषा को भूल ही गये थे, 224 वर्षों से निजाम राजशाही की 7 पीढ़ियों के शासन के कारण। वहाँ केवल उर्दू के लिए प्रामुख्यता थी। अधिकतर स्कूलों में उर्दू भाषा ही शिक्षा माध्यम थी। कन्नड भाषा का पुनरुत्थान करना बड़ा साहस का काम थाँ।

पुराणिक जी ने प्रमुख कन्नड साहित्यकार जैसे बीमसेनराव, मानवी नरसिंहराव के साथ कन्नड़ साहित्य परिषद की स्थापना की और उसके द्वारा कन्नड सिखाने से संबंधित पुस्तकों को छापने का कार्य हाथ में लिया। स्वयंसेवकों को घर घर भेजा कन्नड भाषा की उन्नति और शिक्षा के लिए उत्तेजित करने और कन्नड परीक्षाएँ आयोजित कर प्रमाण पत्र भी देते थे। कन्नड कार्यक्रम बराबर करते थे और समारोह में प्रमुख साहित्यकार जैसे मास्ति, अ.न.कृ. कुवेंपु, गोकाक को आमंत्रण देते। एक और संघ 'कन्नड साहित्य मंदिर' की स्थापना की गयी जिसमें कन्नड माध्यम स्कूलों को प्रारंभ कर कन्नड कार्यक्रम करते थे। पुराणिक जी उसके उपाध्यक्ष थे और यह संस्था आज भी सक्रिय है।

तत्कालीन मुख्य मंत्री केंगल हनुमंतय्या जी ने बीदर कन्नड नाडहब्बा कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया और यह समारोह अत्यंत यशस्वि रहा।

बसव कल्याण में अधिकतर कन्नड भाषी ही होने पर भी और उनका प्रसिद्ध धार्मिक केंद्र होने पर भी उसे 1956 के भाषावार पुनःघटन के संदर्भ में महाराष्ट्र के उस्मानाबाद में मिलाना चाहते थे। इससे पुराणिक जी को दुःख हुआ तब प्रमुख लोगों को इकट्ठाकर उनकी तीव्र याचिका पत्र को संबंधित अधिकारियों को दिया गया। परिणाम स्वरूप बसवकल्याण कर्नाटक के बीदर जिले में ही प्रतिधारित किया गया।

कर्नाटक में कन्नड की प्रोन्नति के लिए पुराणिक जी का योगदान

कई वर्षो के परिश्रम से कन्नड साहित्य परिषद् बेंगलूर से प्रकाशित, समग्र कन्नड-कन्नड शब्दकोष (कई भागों में) के पुराणिक जी सदस्य थे। अपने कन्नड भाषा और साहित्य पर अपार ज्ञान के कारण वे इस कार्य में अपनी अमूल्य सेवा दे सके।

पुराणिक जी बसव समिति के उपाध्यक्ष थे। आप बसव पथ और बसव जर्नल के संपादक भी थे।

एक बार जब पुराणिकजी मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटील जी से विमान अड्डे में मिले तो उनसे विनती की कि कन्नड की कर्नाटक में प्रोन्नति के लिए उसे सरकारी कार्यालयों की प्रशासनिक भाषा बना दे। पाटील जी ने सलाह मानी और कहा कि इस पर एक नोट दीजिए। पुराणिक जी ने नोट तत्काल तैयार किया और अनुमोदन भी मिल गया। एक समिति का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष मास्ति वेंकटेश अयंगार जी थे और पुराणिक जी उसके सचिव बने। अनुष्ठान के तौर

तरीके लिखकर प्रेषित किया गया। उसके बाद यह कार्य कन्नड साहित्य परिषद् के लिए सौंपा गया। परिषद् के जी. नारायण अध्यक्ष बने और पुराणिक जी सचिव। अनुष्ठान कार्य कई स्तरों में पूर्ण हुआ।

पुराणिक जी गालिब और गांधी शती उत्सव से संबंद्ध होने से उस मौके का उपयोग कर गालिब और गांधी के योगदान का कन्नड श्रोताओं को परिचय कराया। गांधी शती समारोह में सीमाप्रदेशी गांधी के रूप में प्रसिद्ध खाँ अब्दुल गफ़ार खाँ को कर्नाटक सरकार ने आमंत्रित किया था और कर्नाटक के कई स्थानों का जब खाँ जी ने भ्रमण किया तो उनके भाषणों को पुराणिकजी अनुवाद करते थे। इस भाषण के अनुवाद की विशेष प्रशंसा हुई।

इसके अलावा पुराणिक जी कन्नड विकास से संबंधित कई संस्थाओं से जुड़े थे।

पुराणिक जी का रचना संसार और उपलब्धियाँ

पुराणिक जी की रचनाओं की सूची अलग से संलग्न है। यहाँ केवल उनकी साहित्यिक उपलब्धियों की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है।

पुराणिक जी कन्नड, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत और उर्दू के विद्वान थे। उनकी रचनाओं में आप इन भाषाओं की खूबी और खुशबू का अनुभव कर सकते हैं। पुराणिक जी की रचनाएँ – कविता, वचन, नाटक, बाल-कविताएँ, गद्य, जीवनी आदि सभी प्रकारों में हैं।

पुराणिक जी की आठ कविता संकलन हैं जिनमें प्रकृति, प्रेम, कर्नाटक, कन्नड, राष्ट्रीयता, विवेक आदि अनेक विषय प्रतिपादित हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना 'मोदलु मानवनागु' (पहले मानव बनो) बहुत लोकप्रिय होकर ख्यात गायकों से गायी गयी है। पुराणिक जी का 'मरुळ सिद्धन कंते' डी. वी. गुंडप्पा जी की प्रसिद्ध काव्य कृति 'मंकुतिम्मन कग्गा' (मूढ़ तिम्मदर्शन) जैसा ही अध्यात्म-परक है और इसे उसका छोटा भाई समझते हैं।

पुराणिक जी की सारी रचनाएँ 'काव्यानंद' काव्यनाम से रची गयी हैं। उनकी रचनाओं को पढ़ते काव्य का आनंद अनुभव कर सकते हैं।

पुराणिक जी ने वचन शैली में तीन पुस्तकें रची हैं। उनका वचनांकित है 'स्वतंत्र धीर सिद्धेश्वर'। सिद्धेश्वर 16वीं शती के संत थे जिन पर पुराणिक बहुत श्रद्धा रखते थे। पुराणिक जी की प्रप्रथम वचन रचना 'वचनोध्यान' के लिए सुप्रसिद्ध 'बिल्वारा प्रशस्ति मिली जो कोलकाता के भारतीय भाषा परिषद से दी जाती है। इस प्रशस्ति को पानेवाले कर्नाटक के सब से प्रथम कवि हैं।

'शरणचरितमृत' पुराणिक जी की बृहत् कृति है जिसमें 64 प्रसिद्ध शिवशरणों का जीवनवृत्त है। प्रथम संस्करण 1964 में हुआ और उसके सात पुर्नमुद्रण हुए हैं। इसे 'शिवशरणों का बाइबल' कहा जाता है। यह एक प्रमुख संदर्भ ग्रंथ है।

पुराणिक जी ने पाँच बाल कविताओं की रचना की है। एक यात्रा वृत्त है और एक नाटक

और सर्वज्ञ पर एक पुस्तक रची हैं। बाल साहित्य के अंतर्गत पहली कविता कृति 'अज्जन कोलिदु नन्नय कुदुरे गे गे गे' (नाना की लाठी मेरा घोड़ा गे गे गे) के लिए श्रेष्ठ बाल कृति के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त है। इसमें अत्यंत श्रेष्ठ बाल कविताएँ हैं।

पुराणिक जी ने 14 नाटक रचे हैं। जब वे कालेज के छात्र थे तभी पहला नाटक 'आत्मार्पण' प्रकाशित हुआ, जो वसवण्णा के जीवन पर आधारित है। उसी समय नाटक खेला गया और उसमें बसवेश्वर का पात्र स्वयं पुराणिक जी ने अभिनय किया था। उसका 'गिरिजा कल्याण' (गिरिजा (पार्वती) विवाह) गीत नाटक है। प्रभात कलाकारों ने उसका नृत्य रूपक प्रस्तुत किया था। इसके लिए राष्ट्रीय मान्यता मिली।

पुराणिक जी की 14 गद्य कृतियाँ हैं। वे सारे तीन भागों में 2021 में कन्नड और संस्कृति विभाग, कर्नाटक सरकार से पुराणिक जी की जन्मशती पर प्रकाशित हैं।

पुराणिक जी ने कन्नड़ अंग्रेजी और उर्दू की कई पत्र पत्रिकाओं में आलेखों को प्रकाशित किया है। प्रसिद्ध उर्दू शायर नज़ीर अकबराबादी और मिर्ज़ा गालिब पर दो पुस्तकें लिखकर उन कवियों का कन्नड पाठकों के लिए परिचय कराया है। वैसे ही पुराणिक जी ने कन्नड साहित्यकारों पर उर्दू पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित किये हैं। पुराणिक जी की कुछ रचनाएँ हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और मराठी में अनूदित हुई हैं।

पुराणिक जी की कविताएँ ख्यात गायकों से विविध भारती आदि में गायी गयी हैं और उनके केसेट भी बने हैं।

पुराणिक जी ने विविध भारती में और चिंतना कार्यक्रम में भाषण दिये हैं। उनके जीवन पर दो डाक्युमेंटरी फिल्म बने हैं। एक दूरदर्शन से और दूसरा सूचना विभाग, कर्नाटक सरकार से बने और उनका कई बार टेलीकास्ट हुआ है।

पुराणिक जी के साठवीं वर्षगांठ पर राज्यस्तर पर अभिनंदन कार्यक्रम संपन्न हुआ और 'काव्यानंद' शीर्षक से अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण हुआ जिसमें उनके आत्म कथन के साथ उनके साहित्य पर प्रसिद्ध लेखकों के आलेख भी प्रकाशित किये गये। इसी संदर्भ में उन्हें 40,000 रुपये सम्मान पूर्वक अर्पित किये गये। इस धन राशि से 'कन्नड साहित्य संवर्धक ट्रस्ट' बना और उसके द्वारा कन्नड साहित्यकारों को 'काव्यानंद पुरस्कार' हर वर्ष दिया जाता है। यह पुरस्कार पिछले 42 वर्षों से दिया जा रहा है। पुराणिक जी के पुत्रों और पौतों के दानराशि से अब यह पुरस्कार पचास हज़ार रुपये नगद राशि के साथ दिया जा रहा है।

पुराणिक जी का समग्र साहित्य का पुनर्मुद्रण उनके सुपुत्र श्री प्रसन्नकुमार पुराणिक और उनकी बहु श्रीमती लता पुराणिक से हुआ है। समग्र साहित्य के अंतर्गत पुराणिक जी की कविताएँ, वचन, नाटक, बाल कविता गद्य, आत्मकथा आदि सम्मिलित हैं। इनके अलावा पुराणिक परिवार ने पुराणिक जी पर ' पोस्टल स्पेशल कवेर' और दो गीत केसेट - एक 'नन्न कुदुरे - बाल कविताएँ' और दूसरा 'संगम' (कविता और वचन) लोकार्पित किया है।

पुराणिक जी को कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं –

कर्नाटक विश्वविद्यालय से गौरव डाक्टरेट

भारतीय भाषा परिषद् कोलकाता से 'भिलवारा प्रशस्ति'

कर्नाटक राज्योत्सव प्रशस्ति

कर्नाटक साहित्य अकादमी प्रशस्ति

मालवाड प्रशस्ति

बाल साहित्य सम्मेलन, धारवाड के अध्यक्ष

कन्नड साहित्य परिषद् सम्मेलन, गुलबर्गा के अध्यक्ष

कई राज्य स्तर और जिला स्तर के संस्थाओं से सम्मान।

पुराणिक जी का परिवार और सेवा-निवृत्ति के बाद उनका जीवन

पुराणिक जी के पिता अत्यंत विवेकवान् थे परंतु उनकी आमदनी बहुत कम थी। उन्होंने अपने बच्चों को अनुशासनबद्ध रीति से पाला परंतु आर्थिक दृष्टि से बच्चों की उच्च शिक्षा में मदद न कर सके। पुराणिक जी को फ्री-शीप और स्कालरशिप में ही शिक्षा पूर्ण करनी पड़ी। पुराणिक जी ने अपने पिता की जिम्मेदारी अपने पर लेकर अपने दो भाईयों की शिक्षा के लिए मदद की और उन्हें अपने ही घर में रहने दिया। उनका पहला छोटा भाई अन्नदानय्या पुराणिक उच्च-न्यायालय में लायर बने और दूसरा छोटा भाई बसवराज पुराणिक इंजिनियरिंग कालेज के सेवा निवृत्त प्रिंसपाल थे। पुराणिक जी ने अपने दोनों भाई और बहन की शादी की जिम्मेदारी ली।

पुराणिक जी का विवाह गिरिजादेवी से हुई और उनकी चार संतान हैं। पुराणिक जी की बड़ी बेटी विजया जी का विवाह के. एन. एम. नंदीश्वर जी से हुई थी और वे सूपर इंटेंडिंग इंजिनियर के रूप में सेवा निवृत्त हुए। उनकी द्वितीय पुत्री डॉ. गीता का विवाह डॉ. गंगाधर पूजारी जी से हुआ जो यू.एस.ए. में बसे हैं और वे वहाँ के प्रसिद्ध डाक्टर हैं। पुराणिक जी का इकलौता पुत्र हैं प्रसन्न कुमार जो जनरल मैनेजर के रूप में सेवा निवृत्त हैं। उनकी पत्नी है श्रीमती लता। पुराणिक जी की छोटी बेटी भारती का विवाह श्री एस.एम. मृत्युंजय से हुआ है जो डिविशनल मैनेजर के रूप में सेवा निवृत्त हैं। पुराणिक जी के कुल आठ पोते हैं। उन सभी ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन में सफलता हासिल की है।

पुराणिक जी सेवा-निवृत्त होने के बाद विविध संगठनों, संस्थाओं के साथ जुड़ने के द्वारा और लिखने तथा पुस्तकें प्रकाशित करने में समय बिताते थे। वे अपने बच्चों और पोतों के साथ समय खुशी से बिताते थे। वे किसी कार्यक्रम में व्याख्यान देने और कार्यक्रमों में अध्यक्षता करने उत्सुक रहते थे।

पुराणिक जी किसी भी धर्म के प्रति पक्षपात न रखते थे। सभी समुदायों के प्रति हार्दिक संबंध रखते थे। अतः हिन्दू, मुसल्मान, इसाई, जैन और बुद्ध समुदाय के संगठनों के आमंत्रण पर

क्रायक्रमों में अध्यक्षता करने जाते थे।

पुराणिक जी अपने परिवार, बंधु, मित्र, साथी साहित्यकार आदि के साथ आत्मीय संबंध रखते थे और उन्हें मदद करने सदा आगे रहते थे।

सिद्धय्या पुराणिक जी का निधन 5 सितंबर 1994 को बेंगलूर में हुआ।